अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

आधुनिक परिदृश्य में भारतीय प्राच्य ज्ञान सम्पदा

आयोजक

श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल (उत्तराखंड) भारत

11-12 जून, 2024

विश्वविद्यालय : एक दृष्टि में

एक राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय के रूप में श्रीदेव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 2011 के अधिनियम के द्वारा राज्य सरकार की अधिसूचना संख्या (270XXXVI(3) 2012/48(1)/2013 के अंतर्गत दिनांक 19 अक्टूबर 2012 को पूर्व में स्थापित दीनदयाल उपाध्याय उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय में संशोधन के अनुक्रम में हुई थी। सुरम्य, नयनाभिराम एवं पृथ्वी के मानदंड के रूप में अवस्थित विशाल नगाधिराज हिमालय के अंचल टिहरी गढ़वाल में यह विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के सात जिलों चमोली, रुद्रप्रयाग, पौड़ी, टिहरी, हरिद्वार, उत्तरकाशी एवं देहरादून के मध्यवर्ती क्षेत्र में अवस्थित है। विश्वविद्यालय का बादशाहीथौल परिसर सामरिक रूप से चंबा और नई टिहरी के मध्य स्थित है, जहाँ से हिमाच्छादित हिमालय और भागीरथी घाटी का विहंगम दृश्य दृष्टिगत होता है। दिल्ली- गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर अवस्थित होने के कारण देश के व्यापक हिस्से से इसका संपर्क बने रहने के साथ ही छात्रों, अध्येताओं विद्वतजनों एवं पर्यटकों के लिए भी सुलभ एवं पसंदीदा स्थान है।

पंडित ललित मोहन शर्मा परिसर ऋषिकेश : एक दृष्टि में

नव सृजित राज्य उत्तराखण्ड के पश्चिमी भाग में उच्च अकादमिक अध्ययन की आवश्यकताओं की सम्पूर्ति हेतु ऋषिकेश में अवस्थित पंडित ललित मोहन शर्मा परिसर एक उत्कृष्ट अकादमिक संस्थान है, जो कि श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय का नूतन परिसर है |उत्तराखंड सरकार द्वारा पूर्व में स्थापित राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय को विश्वविद्यालय के एक परिसर के रूप में परिवर्तित एवं समायोजित करने का निर्णय ऋषिकेश नगर के नाम की सार्थकता को भी औचित्य प्रदान करता है, क्योंकि ऋषिकेश दो शब्दों हृषिक (इंद्रियाँ) एवं ईश (स्वामी) कि संधि से बना है, जो ऐसी परम तपस्थली है, जहाँ कठोर साधना, समर्पण एवं संयम से ज्ञान एवं विज्ञान की प्राप्ति संभव होती है, तथा मोक्ष-प्राप्ति का मार्ग भी उद्घाटित हो सकता है | हिमालय से निःसृत पावन गंगा के तट पर बसा ऋषिकेश नगर अनेक प्राचीन और अर्वाचीन मंदिरों से युक्त ऐसा तीर्थ स्थल है, जो वर्ष भर सहस्त्रों तीर्थयात्रियों के आकर्षण का केंद्र बना रहता है। लोक में प्रचलित हिंदू आस्था एवं विश्वास के अनुसार इस पवित्र नगर का माहात्म्य यहाँ के मंदिरों में की जाने वाली प्रार्थना से संबद्ध है, जिसके फलस्वरूप मनोवांछित फलों यथा मुक्ति/मोक्ष की प्राप्ति संभव होती है। यह नगर देश के व्यापक हिस्से से आवागमन और यातायात की दृष्टि से रेल परिवहन और हवाई सेवा सुविधाओं से भलीभाँति जुड़ा है | निकटतम हवाई अड्डा यहाँ से 21 किलोमीटर दूर जॉली ग्रांट नामक स्थान में स्थित है। समुद्र तल से 340 मीटर की ऊंचाई पर बसे ऋषिकेश नगर का सामान्य तापमान मई-जून माह में 32 डिग्री सेल्सियस से लेकर 35 डिग्री सेल्सियस तक रहता है।

सम्मेलन के उद्देश्य

सम्मेलन का मुख्य प्रयोजन भारत की उत्कृष्ट, सार्वकालिक, प्राचीन ज्ञान सम्पदा की आधुनिक विश्व की समकालीन चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करना तथा अतीत, वर्तमान एवं अनागत के मध्य सेतु स्थापित करना है। इसका लक्ष्य अध्येताओं, शोधकर्ताओं और ज्ञान पिपासुओं के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करना है, जिससे अतीत और आज के मध्य ज्ञान की गहन एकता स्थापित हो, सतत अन्वेषण के क्षितिज खुलें तथा हमारा राष्ट्र एवं समाज सुसमृद्ध हो। यह सम्मेलन आधारभूत रूप से पुरा ज्ञान की समृद्ध विरासत के प्रस्तुतीकरण और सामयिक दौर में संवाद एवं सम्यक सहयोग का आकांक्षी है ताकि आधुनिक समय में हमारे अतीत की सर्वांग सुंदर तस्वीर उभर सके। इसके अतिरिक्त सम्मेलन का उद्देश्य सभी सहभागियों, सहयोगियों मे सफलतापूर्वक परिवर्तनकामी विमर्श की ज्योति को प्रज्ज्वलित करना और स्थायी प्रभाव छोड़ना है। ज्ञान और समझदारी के गतिशील दौर में इस महती भूमिका का निर्वहन हमारा संकल्प भी है ।

सम्मेलन में विमर्श हेतु प्रस्तावित बिन्दु:

- समग्र कल्याण हेतु आरोग्यवर्धक पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को उद्घाटित करना |
- शाश्वत ज्ञान के लिए शिक्षा की प्राचीन प्रणाली का अन्वेषण करना |
- प्राचीन कृषि व्यवस्था के ज्ञान का सतत उपयोग
- ऐतिहासिक शासन प्रणालियों का ज्ञान और उनकी प्रासंगिकता
- प्राचीन राजतंत्रीय व्यवस्थाओं का सैद्धांतिक एवं सामाजिक परीक्षण
- प्राचीन ज्योतिष विज्ञान और कला का अन्वेषण
- पारंपरिक शिल्पकला और वर्तमान संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता
- प्राचीन भारत के गणितीय अविष्कारों और गुत्थियों का अन्वेषण
- स्वस्थ जीवनशैली के लिए पारंपरिक आहार ज्ञान का विश्लेषण
- प्राचीन अनुभवजन्य ज्ञान पद्धति का आधुनिक संदर्भ में परीक्षण
- आयुर्वेद को समग्र जीवन शैली प्रणाली के रूप में स्थापित करना
- 'प्राचीन भारतीय ज्ञान बेहतर जीवन व्यवस्था का पोषक है' इस दृष्टि से सम्पृक्त होना
- गंगा नदी की सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा और संवर्धन
- कृषि, स्वास्थ्य और शासन पर केंद्रित सतत विकास के माध्यम से गंगा नदी के किनारे समुदायों का सशक्तिकरण
- प्राचीन विधिक प्रणाली का वर्तमान संदर्भ में महत्व स्थापित करना
- प्राचीन भारत की समृद्ध अर्थव्यवस्था का पुनरावलोकन
- ऐतिहासिक काल खंडों का आलोचनात्मक परीक्षण एवं इसकी प्रासंगिकता और प्रयोगों पर परिचर्चा
- व्यावहारिक रूप से पारिस्थितिकी के सहज संरक्षण की प्राचीन भारतीय व्यवस्था को समझना
- वर्तमान में प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों को अपनाना
- ऐतिहासिक तथ्यों पर विचार दृष्टि को उद्घाटित करना
- प्राचीन धर्मग्रंथों में वर्णित शासकीय सिद्धांतों का प्रतिपादन
- आधुनिक अनुप्रयोगों के लिए भाषा विज्ञान की समझ
- खनन एवं धातु विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय विद्याओं का योगदान
- वर्तमान जीवन शैली पर भारतीय दर्शनशास्त्र का प्रभाव
- आधुनिक तकनीकी के साथ भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों का विनियोजन
- राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली संस्कृत में
- *1800* वर्षों के शैक्षिक इतिहास की एक यात्रा
- पारंपरिक भारतीय विज्ञान का समावेशी दृष्टिकोण
- सांख्य दर्शन में अनुस्यूत विज्ञान
- वैशेषिक दर्शन में अनुस्यूत विज्ञान
- वेदांत दर्शन में वैज्ञानिक विश्लेषण
- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में क्वांटम की अवधारणा
- गतिज विश्व की वैदिक अवधारणा
- डार्क मैटर और डार्क एनर्जी की वैदिक अवधारणा
- स्ट्रांग फ़ोर्स की उत्पत्ति
- प्रकाश से तीव्र गति की भारतीय अवधारणा
- वैदिक मन्त्रों का अनुगूंज आधारित प्रभाव
- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में शून्य, अनंत और संख्याओं की अवधारणा
- धरती की गोल आकृति तथा गुरुत्वाकर्षण से सम्बंधित प्राचीन भारतीय विचार
- गति के नियमों से सम्बंधित प्राचीन भारतीय विचार
- उपनिषदोत्तर काल के प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ

1. आर्य भट्ट
2. भास्कराचार्य
3. वाराहमिहिर
4. ब्रह्मगुप्त
5. बोधायन
6. श्रीधराचार्य
7. महावीर

- वेदांग ज्योतिष में निहित वैज्ञानिकता
- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में समय, कोण तथा दूरी की गणना
- प्राचीन भारतीय गणना में 'योजन' का परिमापन
- वैदिक साहित्य में लम्बाई की माप की विविध इकाइयाँ
- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में मशीन की अवधारणा
- प्राचीन भारतीय परंपरा में विमान की अवधारणा
- वैदिक परम्परा में पर्यावरण संरक्षण
- प्राचीन भारतीय परंपरा में रसायन शास्त्र का ज्ञान
- वैदिक काल में धातु विज्ञान का आरम्भ
- वैदिक काल में अग्नि की खोज
- वैदिक जीवन विज्ञान

1. वनस्पति वर्ग और जीव वर्ग की वैदिक अवधारणा
2. आयुर्वेद का उद्भव
3. शिव सिद्ध तंत्र
4. च्यवन संहिता
5. सुश्रुत संहिता
6. नाड़ी विज्ञान
7. प्राचीन भारतीय सभ्यता में पशु विज्ञान पर पारंपरिक ज्ञान

- वैदिक ज्ञान परम्परा में समरूप जीव (क्लोन) निर्माण
- समाधि तथा गहन समाधि का विज्ञान

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक एवं अध्यक्ष:
प्रो. एन.के. जोशी
माननीय कुलपति
श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय
बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल

संरक्षक:
प्रो. एम. एस. रावत
परिसर निदेशक, पं. एल. एम. एस. परिसर ऋषिकेश

प्रो. जी. एस. ढींगरा, संकायाध्यक्ष, विज्ञान संकाय
प्रो. डी. सी. गोस्वामी, संकायाध्यक्ष, कला संकाय
प्रो. कंचन लता सिन्हा, संकायाध्यक्ष, वाणिज्य संकाय
प्रो. प्रशांत सिंह, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण

संयोजक:
प्रो. अनिता तोमर
निदेशक, संकाय विकास केंद्र
श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
दूरभाष: 9410361825

आयोजन सचिव:
प्रो. कल्पना पंत, निदेशक
भारतीय ज्ञान परंपरा उत्कृष्टता केंद्र
श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय

प्रो.पूनम पाठक, उपनिदेशक
भारतीय ज्ञान परंपरा उत्कृष्टता केंद्र
श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
दूरभाष: 8279798510, दूरभाष: 9410375756

सदस्य:
- **प्रो. संगीता मिश्रा, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग**
- **प्रो. अधीर कुमार, हिंदी विभाग**
- **प्रो. दिनेश शर्मा, राजनीति विज्ञान विभाग**
- **प्रो. हेमलता मिश्रा, राजनीति विज्ञान विभाग**
- **प्रो. स्मिता बडोला, जंतु विज्ञान विभाग**
- **डॉ0 गौरव वार्ष्णेय, गणित विभाग**
- **डॉ. अशोक कुमार, अर्थशास्त्र विभाग**
- **डॉ. पुष्कर गौड़, खेल विभाग**

सलाहकार समिति:
- **डॉ. डी. एम. त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, जंतु विज्ञान विभाग**
- **प्रो. एस. पी. सती, विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग**
- **प्रो. मनोज यादव, विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग**
- **डॉ. श्रीकृष्ण नौटियाल, विभागाध्यक्ष, भूविज्ञान विभाग**
- **डॉ. अटल बिहारी त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग**
- **प्रो. डी. के. पी. चौधरी, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग**
- **प्रो. मुक्ति नाथ यादव, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग**
- **डॉ. शिखा ममगाईं, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग**
- **प्रो. पुष्पांजलि आर्य, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग**

सम्मेलन की वेबसाइट: https://caiwmc2024.wordpress.com
पंजीकरण लिंक: https://forms.gle/9r5LV4NKWkeqwwGF9

सम्मेलन के उद्देश्य

सम्मेलन का मुख्य प्रयोजन भारत की उत्कृष्ट, सार्वकालिक, प्राचीन ज्ञान सम्पदा की आधुनिक विश्व की समकालीन चुनौतियों के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करना तथा अतीत, वर्तमान एवं अनागत के मध्य सेतु स्थापित करना है। इसका लक्ष्य अध्येताओं, शोधकर्ताओं और ज्ञान पिपासुओं के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करना है, जिससे अतीत और आज के मध्य ज्ञान की गहन एकता स्थापित हो, सतत अन्वेषण के क्षितिज खुलें तथा हमारा राष्ट्र एवं समाज सुसमृद्ध हो। यह सम्मेलन आधारभूत रूप से पुरा ज्ञान की समृद्ध विरासत के प्रस्तुतीकरण और सामयिक दौर में संवाद एवं सम्यक सहयोग का आकांक्षी है ताकि आधुनिक समय में हमारे अतीत की सर्वांग सुंदर तस्वीर उभर सके। इसके अतिरिक्त सम्मेलन का उद्देश्य सभी सहभागियों, सहयोगियों मे सफलतापूर्वक परिवर्तनकामी विमर्श की ज्योति को प्रज्ज्वलित करना और स्थायी प्रभाव छोड़ना है। ज्ञान और समझदारी के गतिशील दौर में इस महती भूमिका का निर्वहन हमारा संकल्प भी है।

विषयवस्तु

सम्मेलन की विषयवस्तु अविच्छिन्न रूप से प्राचीन भारतीय ज्ञान के आधुनिक संदर्भों में अनुप्रयोग पर अभिकेंद्रित है, जिससे वर्तमान समय में परंपरागत और नूतन ज्ञान के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व स्थापित हो। अंतिम निष्कर्ष में इस प्रयत्नशील उद्यम का उद्देश्य प्राचीन भारत के गौरवपूर्ण अतीत और आधुनिक भारत की अंत:प्रज्ञा को एक सूत्र में पिरोना है, एवं ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करना है। एक गतिशील मंच के रूप में सम्मेलन का उद्देश्य विद्वान मनीषियों द्वारा भारत की समृद्ध विरासत, जिसकी जड़ें हमारी आध्यात्मिकता और पवित्र ग्रंथों में वर्णित प्रकृति, योग और औषधीय ज्ञान मीमांसा में निहित है की विवेचना करना है। सांस्कृतिक विविधता, नैतिक जीवन मूल्यों एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों से संपन्न समावेशी, सुपोषक और उच्च नैतिक मानदंडो पर स्थापित हमारी भारतीय सभ्यता स्वयं अपना आदर्श है। संगोष्ठी की विषयवस्तु वैयक्तिक उन्नति हेतु ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग, सामाजिक समरसता एवं विश्व बंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित करती है।

सम्मेलन के प्रमुख आकर्षण

1. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की विविध क्षेत्रों में प्रासंगिकता पर आमंत्रित सुविख्यात विद्वानों का वक्तव्य |
2. आधुनिक संदर्भ में प्राचीन ज्ञान के व्यावहारिक महत्व को दर्शाने हेतु व्यवस्थित सत्र संयोजन |
3. परंपरा और आधुनिकता के सम्मिश्रण द्वारा समरसता, नवाचार एवं संधारणीयता पर स्वस्थ वैचारिक आदान-प्रदान हेतु मंच प्रदान करना |
4. सांस्कृतिक उपक्रमों, कला प्रदर्शनियों एवं स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ समृद्ध भारतीय विरासत का अनुभव साझा करना

अपेक्षित परिणाम

सम्मेलन से अपेक्षा है कि:

- विज्ञान, दर्शन एवं प्रौद्योगिकी समेत विविध क्षेत्रों में प्राचीन भारतीय ज्ञान के अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु तर्कप्रधान संवाद कायम हो |
- पारंपरिक ज्ञान और वर्तमान की चुनौतियों के संगम का अन्वेषण करके नवाचार से युक्त नई विधियों को उत्पन्न करें एवं नए दृष्टिकोण तथा विधियों का मार्ग प्रशस्त करें |
- प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में समृद्ध एवं समाकलित करने हेतु प्रतिभागियों, अध्येताओं, शोधकर्ताओं और प्रशिक्षकों के बीच परस्पर सहयोगात्मक सामंजस्य स्थापित हो |
- प्रतिभागियों को स्तरीय चर्चाओं में योगदान देने के लिए मंच प्रदान करने के अतिरिक्त चयनित पत्रों को प्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशन के अवसर मिलें |
- भारतीय परम्पराओं के स्वर्णिम अतीत को दर्शाने के लिए विविध सांस्कृतिक आयोजन, सांस्कृतिक शोध के साथ सराहने की समझ और संबद्धता को गहनता मिले। भारतीय प्रज्ञा को संरक्षित एवं परिवर्धित करने हेतु अकादमिक और प्रायोगिक स्तर पर कार्यशालाओं और संबंधित प्रस्तुतियों सहित शैक्षिक संसाधनों का भंडारण अनिवार्य रूप से हो |
- भारतीय प्रज्ञा के महत्त्व को उजागर करने के साथ सामुदायिक साझेदारी एवं स्थानीय संदर्भ में सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित, पल्लवित करना और व्यावहारिकता में उतारना ।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शोध-सार जमा करने की अंतिम तिथि: 21 मई, 2024
स्वीकृति की अधिसूचना: 31 मई, 2024
शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि: 31 मई, 2024
ऑनलाइन पंजीकरण की अंतिम तिथि: 21 मई, 2024

महत्वपूर्ण सूचनाएँ:

• पंजीकरण शुल्क

- भारत एवं सार्क देशों हेतु	: Rs. 2000
- भारत एवं सार्क देशो हेतु (स्पॉट पंजीकरण)	: Rs. 2500
- विदेशी प्रतिभागियों हेतु	: $ 200
- विदेशी प्रतिभागियों हेतु (स्पॉट पंजीकरण)	: $ 250
- छात्र (फ़ेलोशिप)	: Rs. 1000
- छात्र (फ़ेलोशिप) (स्पॉट पंजीकरण)	: Rs. 1500
- छात्र (बिना फ़ेलोशिप)।	: Rs. 500
- छात्र (बिना फ़ेलोशिप) (स्पॉट पंजीकरण)	: Rs. 800

• पंजीकरण शुल्क का भुगतान ऑनलाइन किया जा सकता है।

खाता नाम: पं. एलएमएस श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय परिसर ऋषिकेश खाता संख्या: 7646392913
आईएफएससी कोड: IDIB000R639
बैंक का नाम: इंडियन बैंक
पंजीकरण लिंक: https://forms.gle/9r5LV4NKWkeqwwGF9

सम्मेलन की वेबसाइट: https://caiwmc2024.wordpress.com

टिप्पणी

- पंजीकरण शुल्क में सम्मेलन के दौरान मुफ्त सम्मेलन किट, दोपहर का भोजन और पेय पदार्थ शामिल हैं।
- आयोजन समिति आवास सहायता प्रदान करने में असमर्थ है।
- प्रतिभागियों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम और आसपास के पर्यटन स्थलों पर दर्शनीय स्थलों की यात्रा की व्यवस्था की जा सकती है।

कार्यक्रम स्थान: पं. ललित मोहन शर्मा परिसर ऋषिकेश-249201